eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

स्वर्णिम वर्ष की ओर बढ़ते भारत में महिला शक्ति पथ प्रदर्शक के रूप में नवनिर्माण की वाहक– एक समीक्षा

डॉ० मो० इसरार खान[1]
[1]वाणिज्य विभाग, शहीद मंगल पांडे राजकीय महिला महाविद्यालय नगवा, बलिया उ0प्र0

Received: 20 Nov 2020, Accepted: 30 Nov 2020, Published with Peer Review on line: 31 Jan 2021

Abstract

जब महिला समृद्ध होती है तो दुनिया समृद्ध होती है, ऐसे में महिलाओं को सशक्त बनाना न केवल सैद्धांतिक अनिवार्यता है बल्कि सामाजिक विकास के लिए एक रणनीतिक आवश्यकता भी है। इस दृष्टिकोण के साथ भारत ने देश के भीतर महिला सशक्तिकरण को प्राथमिकता दी है। वर्ष 2014 से महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए विभिन्न योजनाओं की शुरुआत कर हर चरण में उनके लिए विशेष नीतियां व योजनाएं बनाई गई है ताकि वे न केवल नारी शक्ति का विकास हो बल्कि नारी शक्ति के नेतृत्व में विकास नए भारत की आधारशिला बने। महिला सशक्तिकरण का सर्वाधिक उपयुक्त विचार महिला उद्यमशीलता है।

आर्थिक दृष्टि से एक उद्यमशील महिला एक कार्यकारी महिला से अधिक शक्तिशाली होती है, क्योंकि स्वामित्व उसे न केवल परिसंपत्तियों और देनदारियो पर नियंत्रण प्रदान करता है बल्कि उसे अधिक आर्थिक स्वतंत्रत भी बनाता है। अब अमृत काल में नारी शक्ति का अभ्युदय सुनिश्चित हो इसके लिए सशक्तिकरण की इस यात्रा को आगे बढ़ाना सभी का दायित्व है। केंद्र सरकार की सोच है कि नारी शक्ति के प्रति सम्मान के दृष्टिकोण का उद्देश्य केवल एक प्रतीक न हो बल्कि हर क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व सुनिश्चित हो ताकि वह भारत की समृद्धि की यात्रा में सक्रिय रूप से भागीदार बन सके। भारत के विकास यात्रा देश की महिलाओं के साथ अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है, इस महत्वपूर्ण संबंध की पहचान करते हुए केंद्र सरकार ने बीते एक दशक में नारी शक्ति को अपने एजेंडे में शामिल किया है। इन प्रयासों का ही परिणाम है कि नारी शक्ति आज नए भारत की पथ प्रदर्शक बनकर उभरी है।

देश की आधी आबादी के विकास के बिना देश को विकसित बनाना नामुमकिन है। केंद्र की वर्तमान सरकार ने इस बात को बखुबी समझा है। बात चाहे स्वास्थ्य की हो या फिर सामाजिक – आर्थिक उत्थान की, बदलाव की हर नई कहानी के केंद्र में अब नारी शक्ति है। यही वजह है कि पिछले एक दशक से आधी आबादी के नेतृत्व में विकास को महत्व दिया जा रहा है। सरकार की इस नीति का ही असर है कि देश की आधी आबादी कठिनाई और चुनौतियों का सामना करते हुए आत्मनिर्भर, शिक्षा और समानता की ओर तेजी से आगे बढ़ रही है।

मुख्य शब्द– स्वर्णिम वर्ष, बढ़ता भारत, महिला शक्ति, नवनिर्माण, सशक्तिकरण

Introduction

हमारे वेदों ने महिलाओं का आहवान 'पुरन्धीः योषा' से किया गया है। यानी महिलाएं अपने नगर, अपने समाज की जिम्मेदारी संभालने में समर्थ हो, महिलाएं देश को नेतृत्व दें। नारी ,नीति,निष्ठा और निर्णय शक्ति के साथ नेतृत्व की प्रतिबिंब होती है। इसीलिए हमारे वेदों ने हमारी परंपरा ने यह आह्वान किया है की नारी सक्षम हो, समर्थ हो और देश को दिशा दे और यही आज के भारत का मूल मंत्र बन गई है। इसी

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

सोच से बीते एक दशक के प्रयासों का ही परिणाम है कि आज सेना हो या स्टार्टअप, खेल जगत हो या शोध, नए भारत में बेटियां हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही है। आज भारत रूढ़िवादी सोच से बाहर निकाल कर नारी के नेतृत्व विकास के मंत्र को लेकर आगे बढ़ रहा है।[1]

आदिकाल से महिलाएं अपनी पसंद और कार्यवाही की स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित रही है। परिवार तथा समाज में स्त्री–पुरुष भेदभाव की धारणा ने इस स्वतंत्रता को और बढ़ावा दिया है। आज भी भारतीय समाज(मुख्यतः ग्रामीण समाज) महिलाओं का कार्य क्षेत्र घर की चारदीवारी को मानता है। इस बारे में वैश्विक दृष्टि डाला जाए तो स्पष्ट है–यूएनडीपी, मानव विकास रिपोर्ट, 2005 के ''लिंक जनित'' विकास में विश्व में भारत की स्थिति में ''भारतीय महिला आर्थिक गतिविधि दर मात्र 42.5% है, जबकि चीन में यह दर 72.4%, नार्वे में 60.3% ,ऑस्ट्रेलिया में 56.7% यू०एस०ए० में 59.6% ,श्रीलंका में 43.5% ,नेपाल में 56. 9% , बांग्लादेश देश में 66.5% और पाकिस्तान 36.7% है। यह आंकड़े बाजार अर्थव्यवस्था से जुड़ी आर्थिक गतिविधियों से संबंधित हैं। यूएनडीपी के अनुसार देखभाल करने वाले ऐसे क्षेत्रों में, जिनमे भुगतान नहीं किया जाता महिलाओं का योगदान अत्यधिक है और भयावह भी। वैश्विक स्तर पर विश्व के कुल उत्पादन में करीब 16 ट्रिलिय (160 खराब) डॉलर का अदृश्य योगदान देखभाल के रूप में महिलाओं का है। इस दिशा में भारतीय महिलाओं का मुद्रा में अपरिवर्तनीय और अदृश्य योगदान 11 ट्रिलियन (110 खरब) डॉलर का है। भारत में केंद्रीय सांख्यिकी संगठन ने 6 चुने हुए राज्यों के 18600 घरों में जुलाई 1998 और जून 1999 के बीच एक समय उपयोग सर्वेक्षण (टाइम यूज सर्वे– टीयूएस) किया था, जिससे पता चलता है कि एक महिला औसतन 34.6 घंटे प्रति सप्ताह देखभाल अर्थव्यवस्था में खर्च करती है। जबकि पुरुष केवल 3.6 घंटे ही खर्च करते हैं। इस प्रकार महिलाओं का योगदान यदि उद्यम के क्षेत्र में दिया जाए तो न केवल महिलाओं का सामाजिक–आर्थिक उत्थान होगा, बल्कि राष्ट्र आर्थिक महाशक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो जाएगा। [2]

स्वर्णिम वर्ष की ओर बढ़ते भारत में एक तरह से विकास की बागडोर आधी आबादी को सौंप दी है। इसके लिए प्रत्येक स्तर पर महिलाओं के विकास को प्राथमिकता दी गई है और यह सुनिश्चित किया गया है कि उनके कार्यक्षमता में विस्तार हो। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की एक रिपोर्ट के मुताबिक पुरुषों के समान महिलाओं की कार्यबल में हिस्सेदारी से भारत की जीडीपी में 27% की बढ़ोतरी हो सकती है। यदि 50% कुशल महिलाएं कार्यबल में शामिल होती है तो विकास दर 1.5% बढ़कर 9% प्रतिवर्ष हो सकती है।

यही कारण है कि केंद्र सरकार द्वारा जितनी भी कल्याणकारी योजनाएं शुरू की गई है उनके केंद्र में महिलाओं का जीवन आसान बनाना और महिलाओं को रोजगार– स्वरोजगार के नए अवसर देने के साथ महिला सशक्तिकरण रहा है। सुकन्या समृद्धि योजना से देशभर की करोड़ो बेटियों के बेहतर भविष्य के लिए पहली बार बचत खाते खुले हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति से भी बेटियों की शिक्षा के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। केंद्र सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि किसी भी काम और किसी भी कार्यक्षेत्र में महिलाओं के लिए कोई बंदिश न हो। इसलिए मीनिंग से लेकर सेना के अग्रिम मोर्चे तक हर क्षेत्र में महिलाओं की भर्ती को खोल दिया गया है। सैनिक स्कूलों से लेकर मिलिट्री ट्रेनिंग स्कूलों तक में बेटियां पढ़ाई और ट्रेनिंग कर रही है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा– स्वयं सहायता समूह ,लखपति दीदी और ड्रोन दीदी जैसी योजनाओं ने ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को नया आधार दिया है। 90.87 लाख स्वयं सहायता समूह में 9.74 लाख करोड रुपए मिशन की शुरुआत से अब तक स्वयं सहायता समूह को दिए जा चुके हैं। 10.5 करोड़ ग्रामीण परिवारों को अब तक स्वयं सहायता समूह से जोड़ा जा चुका है। 25,385 महिला कल्याण सहकारी समिति पंजीकृत हैं वही 1,44,396 डेयरी सहकारी समिति है, जहां काफी संख्या में ग्रामीण महिलाएं कार्यरत हैं। 0.3 करोड़ महिलाओं को लखपति दीदी बनाने का सरकार ने लक्ष्य बना रखा है। 1.25 करोड़ लखपति दीदी बनाई जा चुकी है। लखपति दीदी योजना के तहत स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं को सरकार 5 लाख का ब्याज मुक्त लोन देती है।[3]

जन धन योजना– आर्थिक स्वतंत्रता की नींव – 30.37 करोड़ यानी करीब 56% खाते प्रधानमंत्री जनधन योजना के तहत महिलाओं के खाते खुले हैं।

महिला सम्मान बचत पत्र यानी बचत को अधिक ब्याज की मजबूती – 43 लाख से अधिक खाता योजना के अन्तर्गत अभी तक खोले जा चुके हैं। महिला और नाबालिक लड़कियों के लिए महिला सम्मान बचत प्रमाण पत्र योजना श्आजादी का अमृत महोत्सवश के यादगार के रूप में इस योजना को शुरू की गई थी।

योजना में खाता धारक न्यूनतम 1000 और अधिकतम 2 लाख के साथ दो वर्ष की अवधि के लिए खाता खोल सकते हैं इस खाते में ब्याज दर 7. 5% प्रतिवर्ष है।

बीमा सखी करेगी बढ़ती बीमा क्षेत्र का नेतृत्व–

महिलाओं को तीव्र और सतत राष्ट्रीय विकास का भागीदारी बनाने के लिए उन्हें वित्तीय मजबूती दी जा रही है इसी कड़ी में सरकार ने बीमा सखी योजना की शुरुआत की।

1,00,076 महिलाओं ने बीमा सखी बनाने के लिए पंजीकरण कराया है। 51,552 ने बीमा सखी के रुप काम शुरू किया। करीब 49 हजार का अभी तक प्रशिक्षण चल रहा है।

77000 से अधिक पॉलिसी इन बीमा सखियों ने प्राप्त की। 85 करोड रुपए से अधिक का प्रीमियम प्राप्त हुआ है। 66% कारोबार बीमा सखियों ने ग्रामीण क्षेत्रों में किया। अब तक कराए गए कुल बीमा संख्या में 62% महिलाओं ने पॉलिसी ली है।

स्टैंडअप इंडिया, मुद्रा योजना– उद्यम शुरू करने के लिए 10 लाख से 1 करोड रुपए तक ऋण उपलब्ध कराने वाली स्टैंडअप इंडिया की 83% लाभार्थी महिलाएं हैं। योजना में हर बैंक को कम से कम एक महिला उधारकर्ता को 10 लख रुपए से 1 करोड रुपए के बीच लोन देने का लक्ष्य दिया गया है। मुद्रा योजना में स्वरोजगार के लिए चार श्रेणी में 50 हजार से लेकर 20 लख रुपए तक का लोन दिया जाता है ताकि वह अपने व्यावसायिक कार्यकलापों को स्थापित और विस्तारित कर सके।

इनोवेशन और रिसर्च– विज्ञान और इंजीनियरिंग अनुसंधान बोर्ड की खोजपूर्ण अनुसंधान में महिलाओं के लिए अवसर को बढ़ावा देने वाली पावर योजना 2020 में शुरू की गई। अनुसंधान अनुदान में 97 परियोजनाओं को पोषित किया गया जिसमें 42 फेलोशिप महिलाओं को दी गई।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

सामाजिक न्याय के साथ आर्थिक उदारीकरण– भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं का योगदान हमेशा रहा है। केंद्र सरकार इस भूमिका का और विस्तार कर रही है। आज गांव में बैंक सखी और बीमा सखी के रूप में महिलाएं ग्रामीण जीवन को नए तरीके से परिभाषित कर रही है। गांव–गांव में महिलाएं स्वयं सहायता समूह के माध्यम से नई क्रांति ला रही है। गांव की 1 करोड़ 15 लाख महिलाओं को लखपति दीदी बनाया जा चुका है। मुद्रा योजना भी नारी शक्ति के लिए उसके सशक्तिकरण की बहुत बड़ी भूमिका अदा कर रही है। करोड़ों महिलाओं ने पहली बार मुद्रा योजना में लोन लेकर उद्योग क्षेत्र में कदम रखा है,और उद्योगपति की भूमिका में आई है। महिला और नाबालिक लड़कियों के लिए महिला सम्मान बचत प्रमाणपत्र योजना आजादी के अमृत महोत्सव के यादगार के रूप में 31 मार्च 2023 को शुरू की गई थी। अब तक इसके अंतर्गत। 43,30,121 खाता खोले जा चुके हैं। इस महिला सम्मान बचत प्रमाणपत्र योजना के अंतर्गत खाता किसी महिला द्वारा स्वयं के लिए या किसी नाबालिक लड़की की ओर से अभिभावक द्वारा खोला जा सकता है।

आर्थिक दमदारी की कहानी कहते आंकड़े–

2.21 करोड़ के लगभग महिला स्वामित्व वाली एमएसएमई पंजीकृत है।

1.63 लाख से ज्यादा महिला नेतृत्व वाली एमएसएमई रजिस्टर है जिम पोर्टल पर 31 हजार करोड रुपए से ज्यादा का आदेश प्राप्त हुआ है।

2.26 करोड़ से अधिक महिला किसान को पीएम किसान योजना की 18वीं किस्त तक राशि जारी की गई है।

10% की छूट वार्षिक गारंटी शुल्क में सूक्ष्म और लघु उद्योगों के लिए क्रेडिट गारंटी योजना के तहत महिला उद्यमियों को समर्थन के लिए प्रदान की जा रही है।

90% गारंटी कवरेज महिलाओं को दी जाती है जबकि अन्य उद्यमियों को 75% गारंटी कवरेज दी जाती है।

100 करोड रुपए से अधिक पूंजी या 300 करोड रुपए से अधिक का कारोबार करने वाली प्रत्येक सूचीबद्ध कंपनी में काम से कम एक महिला निदेशक की नियुक्ति को अनिवार्य किया गया है।

44.62 लाख पीएम स्वनिधि लोन महिलाओं को स्वीकृत किया गया है। यह कुल स्वीकृत 99.15 लख लोन का 45% है।

10 करोड़ महिलाओं का बीमा प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना में किया गया है। 1.50 करोड़ महिलाएं ईपीएफओ में शामिल हुई है।

39% लाभार्थी प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम में महिलाएं हैं। यह क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी कार्यक्रम है।

33% महिलाओं को दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना में शामिल करने की अनिवार्यता है। यह 15 – 35 आयु वर्ग के युवाओं के लिए रोजगार से जुड़ा कौशल विकास कार्यक्रम है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Volume 04, Issue 01, Jan 2021

3.16 लाख से अधिक महिलाओ ने वस्त्र मंत्रालय की कपड़ा क्षेत्र में क्षमता निर्माण की समर्थ योजना में अब तक प्रशिक्षण प्राप्त किया है।[4]

अपार संभावनाओं भरे कदम– हमारे देश की अर्थव्यवस्था का समय–समय पर विस्तार होता रहा है ।आज बड़े शहरों में गिग इकोनामी का एक महत्वपूर्ण एरिया विकसित हो रहा है। एक अनुमान के अनुसार आज देश में करीब करीब 1 करोड़ गिग वर्कर है और उसे दिशा में भी काम कर रहे हैं।
इस बजट में कहा गया है कि ई–श्रम पोर्टल पर ऐसे गिग कर्मी अपनी रजिस्ट्री करवाए। ई–श्रम पोर्टल पर आने के बाद उन्हें एक आईडी कार्ड मिले। आयुष्मान योजना का भी लाभ दिया जाएगा।
एमएसएमई सेक्टर में रोजगार के अपार संभावनाएं हैं।यह छोटे उद्योग आत्मनिर्भर भारत के प्रतीक है। नीति साफ है, एमएसएमई को सरलता, सहूलियत और संबल मिले।
एमएसएमई सहित मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर के पूरे इकोसिस्टम को बदलते हुए आगे बढ़ रहे हैं। मिशन मैन्युफैक्चरिंग शुरू कर रहे हैं।
विकसित भारत के निर्माण में सबसे बड़ा योगदान देश के युवाओं का है जो अभी स्कूल कॉलेज में है। वहीं विकसित भारत का सबसे बड़े लाभार्थी बनने वाले हैं।वो हमारा सामर्थ्य है। पिछले 10 साल में लगातार इस तबके को मजबूत करने के लिए सोची– समझी रणनीति से कम कम कर रहे हैं।[5]

निष्कर्ष (Conclusion)– वर्ष 2036 तक भारत की जनसंख्या 152.2 करोड़ होगी और उसमें लगभग 75 करोड़ आबादी महिला शक्ति की होगी। अगर उन्हें समुचित अवसर मिले तो भा विकसित रत दोगुनी गति से आगे बढ़ सकता है। इसी दृष्टिकोण के साथ आधी आबादी के सामर्थ्य की पहचान कर बीते एक दशक से सामाजिक, राजनीतिक, एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की पहल हुई है। इसी का परिणाम है कि भारत की महिलाएं आज स्वतंत्र हैं, आर्थिक रूप से सशक्त है, दृढ़ संकल्प से भरीं है,उनमें सुरक्षा का भाव है, वह केवल अपने सपने नहीं देख रही बल्कि उसे साकार भी कर रही है। सरकार के प्रयासों के कारण दशको से चली आ रही लड़कियां या महिलाएं जो कमतर माननें की सोच थी उसमें क्रांतिकारी बदलाव आया है। सर्वप्रथम महिलाओं को व्यवसायिक शिक्षा से जोड़ना होगा और उनके लिए प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी होगी। इसी प्रकार महिलाओं को अपने उद्यम चलाने के लिए समानता पूंजी के अभाव का सामना करना पड़ता है। इसे दूर करने के लिए सरकारी एवं गैर– सरकारी स्तर पर संचालित वित्तीय संस्थानों को उदारता के साथ पहल की आवश्यकता है। इसी प्रकार महिलाओं को अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक बाधाओ का भी सामना करना पड़ता है। इस दिशा में पुरुष समाज को अपने दृष्टिकोण में परिवर्तन करना होगा और महिला उद्यमिता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना होगा। अंततः महिलाओं को अपने उद्यम चलाने के लिए खुद ही पहल की आवश्यकता है, क्योंकि मूल रूप से यह उनकी ही समस्या है।

संदर्भ ग्रंथ (Reference)–

- Basu,S-: " Forst University of ancient India" Vikas, New Delhi .
- कलाम डॉ० अब्दुल (अनु०वाई० सुंदर राजन) ''भारत 2020'' राजपाल एंड संस कश्मीरी गेट,दिल्ली 2020.
- न्यू इंडिया समाचार ,अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस (8 मार्च) विशेष p-p 12–14
- Ibid p-p 14–16
- Ibid p– 28